डा0 आर0बी0एस0 रावत, प्रमुख वन संरक्षक, उत्तराखण्ड की अध्यक्षता में आयोजित वानिकी अनुसंधान सलाहकार परिषद, उत्तराखण्ड की छठवीं बैठक दिनांक 27–08–2011 का कार्यवृत्त

आज दिनांक 27–08–2011 को मंथन सभागर, राजपुर रोड़, देहरादून में अनुसंधान सलाहकार परिषद की बैठक डा0 आर0बी0एस0 रावत, प्रमुख वन संरक्षक, उत्तराखण्ड, देहरादून की अध्यक्षता में आयोजित की गयी। बैठक में उपस्थित अनुसंधान सलाहकार परिषद के सदस्यों, उनके प्रतिनिधियों एवं विशेष आमंत्रियों की सूची संलग्न है।

मुख्य वन संरक्षक, जैव विविधता संरक्षण, विकास एवं अनुसंधान, उत्तराखण्ड/सदस्य सचिव, आर0ए0जी0 द्वारा समस्त उपस्थित सदस्यगणों का स्वागत करते हुये बैठक में अपना बहुमूल्य समय प्रदान करने हेतु आभार व्यक्त किया गया। आज की बैठक उत्तराखण्ड वानिकी अनुसंधान सलाहकार परिषद की छठवीं बैठक है तथा परिषद के पुनर्गठन के उपरांत दूसरी बार हो रही है तथा आशा व्यक्त की गयी कि वानिकी अनुसंधान कार्यो को दिशा एवं गति प्रदान करने हेतु सदस्यों से बहुमूल्य सुझाव एवं मार्गदर्शन प्राप्त होगा तथा विश्वास व्यक्त किया गया कि तद्नुसार अनुपालन सुनिश्चित किया जायेगा।

तत्पश्चात मुख्य वन संरक्षक, जैव विविधता संरक्षण, विकास एवं अनुसंधान, हल्द्वानी के अनुरोध पर अध्यक्ष महोदय द्वारा वन वर्धनिक, साल क्षेत्र, हल्द्वानी एवं वन वर्धनिक, उत्तराखण्ड, नैनीताल के नियंत्रणाधीन विभिन्न सांख्यिकी प्लॉटो की संकलित पुस्तिकाओं का विमोचन किया गया।

अध्यक्ष महोदय की अनुमति से बैठक की कार्यवाही निम्न प्रकार प्रारम्भ की गयी :–

सर्वप्रथम वन संरक्षक, अनुसंधान वृत्त, हल्द्वानी द्वारा अनुसंधान सलाहकार परिषद की दिनांक 27–07–2010 को आयोजित परिषद की पंचम बैठक में अनुमोदित प्रस्तावों के अनुपालन पर बिन्दुवार निम्न प्रकार से प्रकाश डाला गया :–

(A) कैम्पा के अन्तर्गत स्वीकृत परियोजनाओं की प्रगति

(1) Demonstration plots and trials of need based initiatives

1.1– दशमूल प्रजातियों के प्रदर्शन क्षेत्र की स्थापना :–

लालकुँआ नर्सरी में 1.00 है0 क्षेत्रफल में इसकी स्थापना की जा रही है जिसका मुख्य उद्देश्य प्रदर्शन क्षेत्र के माध्यम से इन प्रजातियों का प्रचार–प्रसार, *ex-situ* संरक्षण एवं सही रोपण सामाग्री की उपलब्धता सुनिश्चित करना है। 5 वृक्ष प्रजातियों के 362 पौधे पंक्तिबद्ध रुप से रोपित किये गये है तथा 5 झाड़ी प्रजातियों को क्यारियों में रोपित किया गया है। पूरे क्षेत्र में स्थल विकास, मार्ग निर्माण, लॉन निर्माण आदि कार्य किये जा रहे है। वन संरक्षक द्वारा रोपित पौधो के उचित परिपालन एवं इस वर्ष किये जाने वाले कार्यो से अवगत कराया गया।

1.2– जिंगो बाइलोबा के प्रदर्शन क्षेत्र की स्थापना :–

नैनीताल वन प्रभाग के अन्तर्गत नगर पालिका कक्ष संख्या 17 व 22 में क्रमशः 1.00 है0 एवं 0.70 है0 अर्थात कुल 1.70 है0 में इसकी स्थापना की जा रही है। नगर पालिका क0सं0 17 में कुल 1100 पौधे (1000 मादा पौधे व 100 नर पौधे) रोपित किये गये है तथा क0सं0 22 में 366 पौधे (320 मादा पौधे व 46 नर पौधे) रोपित किये गये है। वर्तमान में पौधो की जीवितता शत प्रतिशत है। इस प्रदर्शन क्षेत्र की स्थापना का मुख्य उद्देश्य इस जीवित जीवाश्म प्रजाति के प्रति जागरुकता उत्पन्न करना, *ex-situ* संरक्षण एवं भविष्य में इसकी उत्पादकता व बीज निर्माण का अध्ययन करना है। वन संरक्षक द्वारा अवगत कराया गया कि क्षेत्र की सुरक्षा व देखरेख हेतु उचित प्रबन्ध किया गया है।

1.3– अष्टवर्ग प्रदर्शन क्षेत्र की स्थापना :–

आयुर्वेद की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण अष्टवर्ग की दुर्लभ व संकटापन्न प्रजातियों के संरक्षण हेतु इस प्रदर्शन क्षेत्र की स्थापना देववन नर्सरी में की जा रही है। इस प्रदर्शन क्षेत्र से भविष्य में रोपण सामग्री की उपलब्धता भी सुनिश्चित हो सकती है। अष्टवर्ग की आठों प्रजातियॉ को प्रदर्शित किया गया है किन्तु कुछ प्रजातियों की संख्या कम है। वन संरक्षक द्वारा अवगत कराया गया कि इस वर्ष पौधो की संख्या बढाते हुये प्रदर्शन क्षेत्र को उचित विस्तार दिया जायेगा।

1.4– औषधीय पौधों के प्रदर्शन क्षेत्र की स्थापना :–

हल्द्वानी नर्सरी में 0.50 है0 क्षेत्र इस प्रदर्शन क्षेत्र की स्थापना की जा रही है जिसका मुख्य उद्देश्य वानिकी प्रशिक्षण संस्थान, हल्द्वानी में प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले वन रक्षक, वन दरोगा, वन राजिक, वन पंचायातों के संरपंच व सदस्य आदि के साथ–साथ विद्यार्थियों व सामान्य जनता को औषधीय पौधों की जानकारी प्रदान करना व उनके संरक्षण के प्रति जागरुकता उत्पन्न करना है। अबतक 33 प्रजातियों को प्रदर्शित किया गया है। वन संरक्षक द्वारा अवगत कराया गया कि प्रचार–प्रसार हेतु साहित्य तैयार किया जा रहा है। अब तक 504 प्रशिक्षणार्थियों/छात्रों आदि ने इसका भ्रमण किया है तथा स्थानीय व्यक्तियों द्वारा प्रातः कालीन भ्रमण हेतु इसे पसन्द किया जा रहा है।

(2) Establishment /maintenance of seed plots/orchards

2.1– हरड़, सादन, कचनार, ,खरपट, हल्दू एवं चम्पा के एस0एस0पी0ए0 की स्थापना :–

उच्च गुणवत्ता के बीज उत्पादन के उद्देश्य से लालकुँआ नर्सरी में 3.00 है0 क्षेत्रफल में इस एस0एस0पी0ए0 की स्थापना की जा रही है। वर्ष 2010 एवं 2011 में अब तक कुल 853 चयनित पौधो का रोपण 6m X 3m की स्पेसिंग पर किया गया है। पौधो की जीवितता शत प्रतिशत एवं वृद्धि संतोषप्रद बताई गयी।

2.2– सर्पगंधा, सतावर व अश्वगंधा के बीज उत्पादन क्षेत्र की स्थापना :–

इन महत्वपूर्ण औषधीय पौधो के गुणवत्तापूर्ण बीज उत्पादन हेतु लालकुँआ नर्सरी में 0.50 है0 क्षेत्रफल में इन प्रजातियों को रोपित किया गया है। कुल 40 क्यारियॉ बनाई गयी है एवं उचित दूरी पर 6,500 पौधों को रोपित किया गया है।

2.2– तिमूर के बीज उत्पादन क्षेत्र की स्थापना :–

मध्य हिमालयी क्षेत्र के इस महत्वपूर्ण औषधीय झाड़ी प्रजाति के बीज उत्पादन की दृष्टि से नैनीताल वन प्रभाग के नगर पालिका क0सं0 18 में 1.00 है0 क्षेत्रफल में इस बीज उत्पादन क्षेत्र की स्थापना की जा रही है। अब तक बीज द्वारा उत्पादित 2000 पौधे एवं मादा पौधों के कटिंग से उत्पादित 150 पौधों का रोपण किया गया है। कुछ पौधे छायादार स्थानों पर एवं कुछ पौधे खुले स्थानों पर लगाये गये है। वर्तमान जीवितता 80 प्रतिशत से अधिक है तथा मरे पौधो के स्थान पर कटिंग से उत्पादित नये मादा पौधे रोपित किये जायेगें।

(3) Development of nursery techniques for propagation of indigenous species including germination trials and vegetative methods :-

वन संरक्षक द्वारा इन प्रजातियों पर किये गये पूर्व प्रयोगों एवं इन्टरनैट पर उपलब्ध जानकारी के सम्बंध में उल्लेख करते हुये इस प्राजेक्ट के परिणामों से अवगत कराया गया। साथ ही यह भी बताया गया कि इस वर्ष क्या कार्य किये जायेंगे।

3.1– रुईस, तिमूर, भैंकल एवं घिंघारु की नर्सरी तकनीक का विकास :–

रुईस के सम्बंध में बीज का अंकुरण अधिकतम 46.60 % एवं कटिंग का अधिकतम रुटिंग 2.60 % पाया गया है।

तिमूर के बीज का अंकुरण 10.70 % तक पाया गया है, किन्तु कटिंग द्वारा 50 % तक प्रस्फूटन पाया गया है।

घिंघारु बीज का अंकुरण 15 % तक पाया गया है। कटिंग द्वारा पौध उत्पादन का प्रयास अभी नहीं किया गया है।

भैकल के बीज व कटिंग से अभी उत्साहवर्धक परिणाम प्राप्त नहीं हो सकें है जो क्रमशः 1.6 % एवं 25 % है।

3.2– हल्दू, बाकली, सादन व चम्पा की नर्सरी तकनीक का विकास :–

प्रारम्भिक चरण में हल्दू के बीज से अधिकतम 55 % अंकुरण एवं कटिंग से 12.50 % रुटिंग पाई गयी है। हल्दू के हेज गार्डन से प्राप्त नये कल्लो में रुटिंग अत्यंत उत्साहवर्धक पाई गयी है एवं इसका पूर्ण डाटा सितम्बर 2011 तक प्राप्त हो सकेगा।

बाकली के सम्बंध में कोई उल्लेखनीय सफलता प्राप्त नहीं हो सकी है। बीज का अंकुरण मात्र 5 % पाया गया है। कटिंग में 62 % sprouting तो पाई गयी किन्तु कोई रुटिंग नहीं पाई गयी। सदस्यों द्वारा अवगत कराया गया कि बाकली के अधिकांश बीज abortive होते है जिसे ध्यान में रखते हुये इस वर्ष की गतिविधियों को यथाउचित निर्धारित किया जाय।

सादन में कटिंग द्वारा 33 % एवं जड़ के सकर्स द्वारा 90 % तक पौध उत्पादन में सफलता प्राप्त हुयी। बीज द्वारा प्रयास नहीं किया गया है।

चम्पा के बीज उत्पादन के सम्बंध में उचित सफलता प्राप्त नहीं हो सकी है जो मात्र 8 % है। इस वर्ष के क्रियाकलापों में यथा आवश्यक परिवर्तन किया जाय।

3.3– बीजासाल, ढाक, सलई गूग्गल, पाड़ल व चन्दन की नर्सरी तकनीक का विकास :–

बीजासाल के बीज का 40 % तक अंकुरण प्राप्त किया गया है किन्तु कटिंग द्वारा 44% तक sprouting होने के बावजूद कोई रुटिंग प्राप्त नहीं हो सकी।

ढाक के बीज का 30 % तक अंकुरण प्राप्त किया गया है एवं कटिंग द्वारा 45.80 % तक sprouting एवं 20.80 % तक रुटिंग प्राप्त की गयी है।

सलई गूग्गल में कटिंग द्वारा 12.50 % तक ही सफलता प्राप्त की जा सकी है एवं गत वर्ष बीज उपलब्ध न होने के कारण बीज के अंकुरण का अध्ययन नहीं किया जा सका।

पाड़ल के बीज अंकुरण का परिणाम भी काफी उत्साहवर्धक प्राप्त हुआ है जो 62 % है। पाडल के पौध उत्पादन का अध्ययन कटिंग द्वारा किये जाने की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती।

चन्दन के बीज का अंकुरण 58 % तक प्राप्त किया जा चुका है तथा इस वर्ष की गतिविधियों में इसे बढ़ाने हेतु प्रयास किया जायेगा।

3.4 केदारपाती की नर्सरी तकनीक का विकास :–

कटिंग के माध्यम से 61 % तक प्रवर्धन पाया गया है। बीज प्राप्त न होने के कारण गतवर्ष बीज अंकुरण का अध्ययन नहीं किया जा सका जो इस वर्ष किया जायेगा।

(4) Modern seed storage facility for important species and strengthening of existing nurseries

वन संरक्षक द्वारा अवगत कराया गया कि इसके अन्तर्गत जनरेटर क्रय का प्राविधान रखा गया था जो आर0टी0 योजना से बजट की उपलब्धता के अनुरुप किया गया तथा मात्र डीजल व रखरखाव का व्यय ही कैम्पा मद से किया जायेगा। सीड़ जर्मीनेटर एवं तापमान व आर्द्रता नियंत्रक उपकरण भी

क्रय नहीं किये जा सके जिसके क्रय हेतु इस वर्ष उचित कार्यवाही की जायेगी। अभी तक केवल भण्डारण उपकरण ही क्रय किये गये है।

(5) Collaborative Research for preparation of volume table, climate change studies, hydrological investigation, Development of urban forestry models, stake holders survey on forestry issues, forest certification, inventorization of vegetation, etc

5.1– साल, सागौन, यूकेलिप्टस एवं पौपलर का वाल्यूम टेबल तैयार करना :–

एफ0आर0आई0, देहरादून द्वारा यह परियोजना क्रियान्वित की जानी है। प्रारम्भ में उनके द्वारा रुपये 54.85 लाख की परियोजना प्रस्तुत की गयी थी। अपर प्रमुख वन संरक्षक, वन अनुसंधान, प्रशिक्षण एवं प्रबन्ध, हल्द्वानी इसके लिये रुपये 27.65 लाख का अनुमान करते हुये परियोजना के वित्तीय प्राविधानो को संशोधित करने का अनुरोध किया गया। तत्पश्चात पुनः रुपये 41.35 लाख का संशोधित प्रस्ताव एफ0आर0आई0, देहरादून द्वारा प्रस्तुत किया गया। अध्यक्ष महोदय द्वारा इस परियोजना के उद्देश्यों के महत्ता का उल्लेख करते हुये निर्देश दिया गया कि इसमें काफी बिलम्ब हो चुका है तथा परिषद की सहमति से परियोजना की सैद्वान्तिक स्वीकृति प्रदान की जाती है एवं क्रियान्वयन से पूर्व सदस्य सचिव द्वारा एफ0आर0आई0, देहरादून के सम्बन्धित अधिकारियों से विचार–विमर्श कर परियोजना लागत के सम्बंध में निराकरण कर अध्यक्ष महोदय को सूचित किया जाय।

5.2– अस्कोट वन्य जीव विहार में काले बन्दर के प्रजाति की पहचान :–

इस सम्बंध में आवश्यक खून के 3 सैम्पल National Center of Biological Sciences, Bangalore को भेजे गये-है तथा रिपोर्ट की प्रतिक्षा की जा रही है। इसके अतिरिक्त इन बन्दरों के प्राकृतिक–वास के सम्बंध में किये गये अध्ययन के सम्बंध में बताया गया कि अभी तक 140 बन्दर 6 स्थानों पर देखे गये है, जिनमें व्यस्क/बूढें बन्दरों की संख्या नये बन्दरों की तुलना में अधिक है। परिषद द्वारा इस सम्बंध में जेड0एस0आई0 से सम्पर्क करने का सुझाव दिया गया।

5.3– औषधीय पौधों मुख्यतः झूला के संग्रंहण–कर्ताओ का सामाजिक–आर्थिक सर्वे :–

अपर प्रमुख वन संरक्षक, वन अनुसंधान, प्रशिक्षण एवं प्रबन्ध, हल्द्वानी की अध्यक्षता में गठित उप समिति द्वारा यह सुझाव दिया गया था कि इस परियोजना को गढ़वाल विश्वविद्यालय को आउटसोर्स कर दिया जाय। परिषद द्वारा यह सुझाव दिया गया कि गढ़वाल विश्वविद्यालय से इस सम्बंध में प्रस्ताव प्राप्त कर लिये जायें तथा अनुसंधान शाखा के फील्ड कर्मियों को भी किसी न किसी रुप में सम्बद्ध रखा जाय।

5.4– जंगली सगंध प्रजातियों का रासायनिक परीक्षण/अध्ययन :–

वन संरक्षक द्वारा अवगत कराया गया कि 13 किग्रा. देवदार हर्टवुड सगंध पादप केन्द्र, सेलाकुई को भेजा गया है, जिससे तेल की उपलब्धता व गुणवत्ता की जॉच की जा सके। तेजपात पत्तियों के परीक्षण हेतु माह सितम्बर–अक्टूबर में 5 जनपदो से पत्तियों को एकत्र करने की तैयारी की गयी है। चन्दन के तेल के परीक्षण हेतु चन्दन की लकड़ी संगध पादप केन्द्र, सेलाकुई को लालकुँआ नर्सरी से शीघ्र उपलब्ध करा दी जायेगी। परिषद द्वारा सुझाव दिया गया कि देवदार व चीड़ के बीज के तेल का भी परीक्षण कर इसके व्यावसायिक उपयोग की सम्भावना ज्ञात की जाय। इसके अतिरिक्त संगध पादप केन्द्र, सेलाकुई से विचार–विमर्श कर अन्य प्रजातियों के सम्बंध में आवश्यकतानुसार कार्यवाही की जायेगी।

(B) आर0टी0 योजना के अन्तर्गत स्वीकृत परियोजनाओं की प्रगति

(1) **बुरांश की नर्सरी तकनीक का विकास :–**

वन संरक्षक द्वारा अवगत कराया गया कि बुरांश के बीज का अच्छा अंकुरण पाया गया है तथा पौधों को प्रिक करने का कार्य किया जा रहा है। कटिंग एवं Air layering द्वारा अभी तक रुटिंग में सफलता प्राप्त नहीं हुई है। एफ0आर0आई, देहरादून के वैज्ञानिको द्वारा अवगत कराया गया कि आई0बी0ए0 5000 ppm से अधिक सांद्रता का प्रयोग रुटिंग पर विपरीत प्रभाव डालता है। विस्तृत विचार–विमर्श के उपरांत उचित पाया गया कि एफ0आर0आई0, देहरादून द्वारा विकसित वायर तकनीक को ध्यान मे रखते हुये कार्य किया जाय।

(2) **दमस्क गुलाब एवं पुष्कर मूल के प्रदर्शन क्षेत्र की स्थापना :–**

दमस्क रोज को गत वर्ष 2m X 2m की स्पेसिंग पर मुनस्यारी हर्बल गार्डन में 1.50 है0 क्षेत्रफल में रोपित किया गया था। इसकी सफलता वर्तमान में 60 % है तथा कुछ पौधों में इस वर्ष पुष्पन भी पाया गया। पुष्कर मूल को 0.5 है0 क्षेत्रफल में 1m X 1m की स्पेसिंग पर जुलाई 2011 में रोपित किया गया है। पौधों की सुरक्षा व देखरेख हेतु आवश्यक कार्यवाही की जा रही है।

(3) **यूकेलिप्टस के नये क्लोन का विकास :–**

वन संरक्षक द्वारा अवगत कराया गया कि यह 10 वर्षीय अर्थात दीर्घकालीन परियोजना है। गतवर्ष टांडा, ढीमरी व बरहनी क्षेत्रों में 89 CPT चयनित कर उनसे बीज एकत्रित किया गया एवं 20,000 पौध उगाये गये। वर्तमान में 455 पौधे बीमारी–रोधी पाये गये है, जिनके रोपण आदि की कार्यवाही भविष्य में की जायेगी।

(4) **पौपलर के नये क्लोनों का विकास :–**

यूकेलिप्टस की तरह यह भी दीर्घकालीन परियोजना है। 12 मादा एवं 18 नर CPT का चयन करने के उपरांत नियंत्रित परागण विधि से बीज प्राप्त किया गया। 66 क्रास के विरुद्ध 14 क्रास सफल रहे, जिसके नर्सरी ट्रायल के सम्बंध में आवश्यक कार्यवाही की जा रही है। उनके द्वारा यह भी अवगत कराया गया कि वर्ष 2005 के 14 एवं वर्ष 2006 के 33 क्लोनो में क्रमशः 9 व 8 क्लोन promosing पाया गया है, जिसका फील्ड ट्रायल दिसम्बर 2010 में स्थापित किया गया है।

(5) **विभिन्न जलवायू क्षेत्रों के वृक्षारोपणों में most promosing प्रजातियों का मूल्यांकन अध्ययन :–**

वन संरक्षक द्वारा अवगत कराया गया कि वृक्षारोपण क्षेत्रों की सूची प्रभागों से प्राप्त न होने के कारण प्रारम्भ नहीं किया जा सका। कुछ प्रभागों से अभी हाल में सूचना प्राप्त हुई है एवं इस परियोजना को शीघ्र प्रारम्भ करने का प्रयास किया जायेगा।

मुख्य वन संरक्षक/सदस्य सचिव द्वारा कैम्पा तथा आर0टी0 योजना के अन्तर्गत नये प्रस्ताव प्रस्तुत किये गये तथा समिति द्वारा विस्तृत एवं सम्यक विचारोपरान्त निम्न प्रकार निर्णय लिये गये :–

(A) कैम्पा के अन्तर्गत प्रस्तुत नई परियोजनाऐं :–

क्रसं	परियोजना का नाम	समिति का निर्णय/सुझाव
Collaborative Research for preparation of volume table, climate change studies, hydrological investigation, Development of urban forestry models, stake holders survey on forestry issues, forest certification, inventorization of vegetation, etc (1a)		
1	Suitability Study of *Melia composita.*	एफ0आर0आई0, देहरादून के सहयोग से संचालित होने वाली इस परियोजना को परिषद द्वारा स्वीकार किया गया।
2	Evaluation of disease resistant *Dalbergia sissoo* (Shisham).	उपरोक्तानुसार।
3	Production and fibre quality study of *Girardiana heterophylla* (Bichhu Ghas) at Gopeshwar and Gaja	बॉस एवं रेशा विकास बोर्ड, उत्तराखण्ड के सहयोग से संचालित होने वाली इस परियोजना को परिषद द्वारा स्वीकार किया गया। श्री लेप्चा द्वारा सुझाव दिया गया कि छाया एवं खुले स्थान के प्रभाव का भी इसी प्रयोग में अध्ययन कर लिया जाय।
4	Establishment of Van Vigyan Kendra at Haldwani	आर0सी0एफ0आर0ई0, देहरादून के सहयोग से संचालित होने वाली इस परियोजना को परिषद द्वारा स्वीकार किया गया।
5	FRI projects regarding Forest Fire Impact Studies and Climate Change Studies.	अध्यक्ष महोदय द्वारा एफ0आर0आई0 के अधिकारियों/वैज्ञानिकों से विचार–विमर्श कर रिपोर्ट प्रस्तुत करने के निर्देश दिये गये है।
Demonstration plots and trials of need based initiatives (1b)		
1	Multilocational trial of *Acacia mangium* in Tarai Central Divs.	परिषद द्वारा सुझाव दिया गया कि इस परियोजना के अन्तर्गत *Acacia mangium* के साथ–साथ एक–दो और प्रजातियों को सम्मिलित करने पर विचार किया जाय।
2	Provenance Trial of *Michelia champaca* in Tarai Central Div.	परिषद द्वारा प्रस्ताव को स्वीकार किया गया।
3	Spacing Trial of Eucalyptus for Industrial pulp wood.	परिषद द्वारा प्रस्ताव को स्वीकार किया गया किन्तु यह सुझाव दिया गया कि पौधो की स्पेसिंग को और कम किया जाय।
4	Field Trial of Kedarpati at Deovan (Kalsi Range)	परिषद द्वारा प्रस्ताव को स्वीकार किया गया।
5	Demonstration plot of *Bauhinia semla* (Semla gum) at Lohaghat.	परिषद द्वारा प्रस्ताव को स्वीकार किया गया।
Establishment /maintenance of seed plots/orchards (1c)		
1	Vegetative propagation orchard of *Cotoneaster bacillaris* (Ruinsh) at Lohaghat nursery.	परिषद द्वारा प्रस्ताव को स्वीकार किया गया।
2	Establishment of Eucaltptus CSO at Lalkuan	परिषद द्वारा प्रस्ताव को स्वीकार किया गया।
Development of nursery techniques for propagation of indigenous species including germination trials and vegetative methods (1d)		
1	To develop propagation techniques of *Meizotropis pellita* (Patwa) at Sadiatal nursery	परिषद द्वारा प्रस्ताव को स्वीकार किया गया।
2	To develop nursery technique of *Gardenia turgida* (Thanela) at Haldwani nursery.	परिषद द्वारा प्रस्ताव को स्वीकार किया गया।
3	To standardize nursery technique of *Lannea coromandelica* (Jhingan) at Shyampur nursery.	परिषद द्वारा प्रस्ताव को स्वीकार किया गया।
Modern seed storage facilities for important species & strengthening of existing nurseries (1e)		
1	Establishment of mist chamber and shade net at Kalika, Ranikhet	परिषद द्वारा प्रस्ताव को स्वीकार किया गया।
2	Renovation of Lohaghat nursey (Repair of beds, retaining walls, bunds, paths etc.	परिषद द्वारा प्रस्ताव को स्वीकार किया गया।

3	Construction of retaining wall at Gaza nursery.	परिषद द्वारा प्रस्ताव को स्वीकार किया गया।
4	Construction of protection wall in Shyampur nursery	परिषद द्वारा प्रस्ताव को स्वीकार किया गया।
5	Construction of protection wall in Lalkuan nursery	परिषद द्वारा प्रस्ताव को स्वीकार किया गया।
Strenghthening of existing botanical / herbal garden (1f)		
1	Development of climber pergola at Haldwani herbal garden	परिषद द्वारा प्रस्ताव को स्वीकार किया गया।
2	Development of bamboosetum at Haldwani herbal garden	परिषद द्वारा प्रस्ताव को स्वीकार किया गया।
3	Development of fruit orchard at Munsiyari herbal garden	परिषद द्वारा प्रस्ताव को स्वीकार किया गया एवं सुझाव दिया गया कि जंगली फलदार प्रजातियों को विशेष महत्व दिया जाय।
Strengthening research cell by hiring technical personnel & up gradation of laboratory (1g)		
1	Training at FRI, Dehradun	परिषद द्वारा प्रस्ताव को स्वीकार किया गया।
2	Exposure visits to other states	परिषद द्वारा प्रस्ताव को स्वीकार किया गया।
3	Hiring of Technial personnel	परिषद द्वारा प्रस्ताव को स्वीकार किया गया एवं मुख्यालय स्तर पर एक आर0ए0 रखने का सुझाव दिया गया।
Publication of APR, Research bulletins (1h)		
1	Publication of ARR.	परिषद द्वारा प्रस्ताव को स्वीकार किया गया।
2	Publication of Research bulletins, Lab to land leaflets, centre of excellence booklets etc.	परिषद द्वारा प्रस्ताव को स्वीकार किया गया।

(B) आर0टी0 योजना के अन्तर्गत प्रस्तुत नई परियोजनाऐं :–

क्र.सं.	परियोजना का नाम	समिति का निर्णय/सुझाव
1	Developing new clones of Eucalyptus.	यह निरंतर चलने वाली परियोजना है एवं परिषद द्वारा प्रस्ताव को स्वीकार किया गया।
2	Developing new clones of Poplar.	यह निरंतर चलने वाली परियोजना है एवं परिषद द्वारा प्रस्ताव को स्वीकार किया गया।
3	Study of effect of edaphic factors on twisted and normal Chir Pine.	परिषद के सदस्यों का मत था कि इस सम्बंध में काफी कार्य एफ0आर0आई0, देहरादून द्वारा पूर्व में किया गया है। अतः ऐसी परियोजनाऐं नहीं ली जानी चाहिए। चूकि वन वर्धनिक द्वारा रोपण कार्य किया जा चुका है अतः विशेष परिस्थिति में परिषद द्वारा परियोजना को स्वीकृति प्रदान की गयी एवं यह सुझाव दिया गया कि इस सम्बंध में पूर्व प्रयोगों का भली–भॉति अवलोकन कर लिया जाय।
4	Extension of research activities.	परिषद द्वारा प्रस्ताव को स्वीकार किया गया।
5	Preservation cum Seed Plot of *Quercus lanuginosa (Latua oak)* at Binsar Wildlife Sanctuary, Almora.	परिषद द्वारा प्रस्ताव को स्वीकार किया गया।
6	Establishment of Bamboo hedge garden for multiplication at Lalkuan.	परिषद द्वारा प्रस्ताव को स्वीकार किया गया।
7	Establishment of Rudraksh hedge garden for multiplication at Haldwani.	परिषद द्वारा प्रस्ताव को स्वीकार किया गया।
8	Strengthening of tissue culture lab.	इस सम्बंध में अपर प्रमुख वन संरक्षक, वन अनुसंधान, प्रशिक्षण एवं प्रबन्ध, हल्द्वानी की अध्यक्षता में गठित उप समिति को अध्यक्ष महोदय की सहमति से आवश्यक कार्यवाही हेतु अधिकृत किया गया।

परिषद द्वारा दिये गये विशेष निर्देश :–

(1) डा0 जे0एस0 मेहता द्वारा सुझाव दिया गया कि रिसर्च कार्य महत्वपूर्ण एवं विशिष्ट प्रकृति के होते है तथा इसके लिये विभागीय स्टाफ उपलब्ध नही हो पाते है। अतः उचित होगा कि इसके समाधान हेतु प्रशिक्षण की भॉति रिसर्च शाखा में कार्यरत अधिकारियों/कर्मचारियों को 15 प्रतिशत विशेष वेतन प्रदान किया जाय। अध्यक्ष महोदय द्वारा निर्देश दिया गया कि अनुसंधान शाखा द्वारा यथोचित प्रस्ताव उन्हें प्रेषित किया जाय।

(2) एफ0आर0आई0, देहरादून के वैज्ञानिको द्वारा सुझाव दिया गया कि नियंत्रित तापमान में बीज अंकुरण हेतु सीड़ जर्मिनेटर का क्रय किया जाय जिससे अंकुरण सम्बन्धी प्रयोगो में काफी सुविधा होगी। साथ ही यह भी अवगत कराया गया कि बीज को पानी में Soaking treatment हेतु पानी का तापमान 18^0C होना चाहिए।

(3) डा0 बरफाल द्वारा सुझाव दिया गया कि रिसर्च शाखा में कार्यरत अधिकारियों/कर्मचारियों को अन्य प्रदेशों का एक्सपोजर भ्रमण कराया जाय, जिससे दूसरे राज्यों में हो रहे अच्छे कार्यो की जानकारी व लाभ प्राप्त हो सकें।

(4) परिषद द्वारा उच्च हिमालयी क्षेत्रों में ऊर्जा वनीकरण सम्बन्धी प्रजातियों यथा भोजपत्र, जूनीपर, सैलिक्स आदि के ट्रायल का सुझाव दिया गया जैसा कि लेह में सैलिक्स के सफल वनीकरण तकनीक का विकास किया गया है।

(5) अध्यक्ष महोदय द्वारा यह सुझाव दिया गया कि विभिन्न फील्ड ट्रायलों हेतु लगभग 10–10 है0 की भूमि का चयन क्षेत्रीय वनाधिकारियों के सहयोग से 3–4 स्थानों पर कर लिया जाय जिससे एक ही स्थान पर कई ट्रायल स्थापित किंये जा सके एवं उनकी देखरेख सुचारु ढंग से हो सकेगी। अनुसंधान शाखा द्वारा नियमित रुप से तकनीकी पैम्फलेट निकाला जाय, वनवाणी में शोध कार्यो से सम्बन्धित लेख प्रकाशित किया जाय एवं इन्डियन फारेस्टर/कान्फ्रेन्स/सेमिनार आदि में अधिक से अधिक पेपर प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाय।

(6) अध्यक्ष महोदय द्वारा यह विशेष निर्देश दिया गया कि कैम्पा के अन्तर्गत चिड़ियापुर एवं लालकुँआ में आधुनिक तकनीक पर आधारित 2 बड़ी नर्सरियों की स्थापना/विस्तार किया जाय जिसका मुख्य उद्देश्य कृषि वानिकी एवं विभागीय रोपण हेतु वृहद स्तर पर महत्वपूर्ण व विशिष्ट फलदार/ चारा प्रजातियों के उच्च गुणवत्ता की पौध तैयार करना होगा। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रभागों में पूर्व में स्थापित कई हाईटेक नर्सरियो का उपयोग प्रभागों द्वारा नहीं किया जा रहा है उन्हें भी अनुसंधान शाखा द्वारा अपनी देखरेख में लेकर पौध उत्पादन की कार्यवाही की जाय।

अंत में अध्यक्ष महोदय द्वारा सभी सदस्यों को धन्यवाद ज्ञापित करते हुये परिषद की बैठक समाप्त की गयी।

अनुमोदित

30/8/2011

(डा0 आर0बी0एस0 रावत)
प्रमुख वन संरक्षक, उत्तराखण्ड/
अध्यक्ष, वानिकी अनुसंधान सलाहकार परिषद
उत्तराखण्ड

(एस0के0 सिंह)
मुख्य वन संरक्षक
जैव विविधता संरक्षण, विकास एवं अनुसंधान,
हल्द्वानी /सदस्य सचिव, वानिकी अनुसंधान
सलाहकार परिषद, उत्तराखण्ड

अनुसंधान सलाहकार समिति की बैठक दिनांक 27–08–2011 में उपस्थित सदस्यों की सूची

क0 सं0	अधिकारी का नाम	पदनाम	पता	मोबाईल नं0	ई–मेल
1.	श्री आर0 बी0 एस0 रावत	प्रमुख वन संरक्षक, उत्तराखण्ड/अध्यक्ष	वन विभाग	9412051550	pccf_uta@yahoo.com
2.	डा0 एस0 एस0 नेगी	निदेशक एफ0आर0आई0	एफ0आर0आई0 देहरादून	0135–2755277	negiss@icfre.org
3.	डा0 वी0 एस0 बरफाल	प्रमुख वन संरक्षक, (सेवा निवृत्त)	बसन्त विहार, देहरादून	0135–2763120	bsburfal@rediffmail.com
4.	श्री ए0 के0 दत्त	प्रबन्ध निदेक्षक, वन विकास निगम	वन विकास निगम, देहरादून	9411115000	ankrdutt@yahoo.com
5.	श्री एस0 टी0 एस0 लेपचा	अपर प्रमुख वन संरक्षक,	वन विभाग	9412071394	
6.	श्री एस0 के0 सिंह	मुख्य वन संरक्षक	वन विभाग	9412076135	sksingh2015@yahoo.com
7.	श्री आर0एन0 झा	वन संरक्षक	वन विभाग	9412055679	
8.	श्री बी0 पी0 सिंह	उप निदेशक, वन पंचायत, नैनीताल	का0 प्र0 वन संरक्षक, नैनीताल		
9.	एस0 एम0 जोशी	वन संरक्षक (मुख्यालय)	85 राजपुर रोड वन मुख्यालय, देहरादून	9412030587	5smjoshi@gmail.com
10.	असीम श्रीवास्तव	प्राध्यापक, भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून	भारतीय वन्यजीव संस्थान, चन्द्रवनी, देहरादून, 48001		wii@wii.gov.in
11.	सर्वेश सिंघल	प्रमुख, सं0 स0 प्र0 वन अनुसंधान संस्थान	भारतीय वन्यजीव संस्थान, चन्द्रवनी, देहरादून, 48001	9411362703	head_rsm@kfre.org
12.	पी0 आर0 सिन्हा	निदेशक, भारतीय वन्यजीव संस्थान	भारतीय वन्यजीव संस्थान, चन्द्रवनी, देहरादून, 48001	9412057410	dwii@wii.gov.in
13.	डा0 जे0 के0 बिष्ट	प्रधान वैज्ञानिक एवं विभागाध्यक्ष (फ0उ0वि0) वि0 प0	विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, अल्मोड़ा	9412436120	bishtjb@hotmail.com
14.	डा0 जे0 एस0 मेहता	सिल्वीकल्चरिस्ट, उत्तराखण्ड़ (अवकाश प्राप्त)	ओकघर, पूर्वी पोखरखाली, अल्मोड़ा	9412092511	jsmehtkailashi@gmail.com
15.	डा0 सुभाष नौटियाल	प्रभाग प्रमुख, वनस्पति विज्ञान प्रभाग, एफ0आर0आई0	एफ0आर0आई0, देहरादून	9761651454	nautiyals@icfre.org
16.	डा0 एच0 एस0 गिनवाल	प्रभाग प्रमुख, अनुवाशिकी एवं वृक्ष प्रवर्धन प्रभाग	एफ0आर0आई0, देहरादून	9412413158	ginwalhs@icfre.org
17.	श्री0 के0 एम0 राव	वन संरक्षक,	अनुसंधान वृत्त, हल्द्वानी	9411107617	kesavarajumuralirao@gmail.com
18.	श्री ए0 के0 महर	वन वर्धनिक	साल क्षेत्र, हल्द्वानी।	9458160553	van_vardhanicsal@ridiffmail.com

कार्यालय मुख्य वन संरक्षक, जैव विविधता संरक्षण, विकास एवं अनुसंधान हल्द्वानी

दूरभाष : 05946-234047, फैक्स: 05946-235136 ई–मेल *ccfresearch@rediffmail.com*

पत्रांक– 78/6–31 ,दिनांक, हल्द्वानी 30–08–2011

प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित :–

1– प्रमुख वन संरक्षक, उत्तराखण्ड।
2– प्रमुख वन संरक्षक, ग्राम वन, वन पंचायत एवं संयुक्त वन प्रबन्ध, उत्तराखण्ड।
3– प्रमुख वन संरक्षक, वन्य जीव, उत्तराखण्ड, नैनीताल।
4– निदेशक, वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून।
5– निदेशक, भारतीय वन्य जीव संस्थान, देहरादून।
6– डा0 बी0एस0बरफाल, अध्यक्ष, उत्तराखण्ड जैव विविधता बोर्ड, देहरादून।
7– अपर प्रमुख वन संरक्षक, नियोजन एवं वित्तीय प्रबन्धन, उत्तराखण्ड।
8– अपर प्रमुख वन संरक्षक, वन अनुसंधान, प्रशिक्षण एवं प्रबन्धन, उत्तराखण्ड।
9– अपर प्रमुख वन संरक्षक, कार्ययोजना, हल्द्वानी।
10– प्रबन्ध निदेशक, उत्तराखण्ड वन विकास निगम, देहरादून।
11– निदेशक, पं0जी0बी0पंत इन्स्टीटयूट ऑफ हिमालय इन्वायरमैन्ट एण्ड डैवलपमैन्ट, अल्मोड़ा।
12– निदेशक, वि0प0कृ0अ0संस्थान, कोसी, अल्मोड़ा।
13– निदेशक, जड़ी बूटी शोध एवं विकास संस्थान, गोपेश्वर, चमोली।
14– निदेशक, यूकास्ट, उत्तराखण्ड, देहरादून।
15– कुलपति, पं0 गो0ब0पं0 कृषि वि0वि0 पंतनगर।
16– डा0 जे0एस0 मेहता, से0नि0 वनाधिकारी, अल्मोड़ा।
17– डा0 वीना पेन्यूली, से0नि0 विभागाध्यक्ष, वनस्पति विज्ञान, एम0के0पी0 कालेज, देहरादून।
18– डा0 रामेश्वर दयाल, रसायन विशेषज्ञ (से0नि0) एफ0आर0आई0, देहरादून।
19– श्री जे0के0 विष्ट, वि0प0कृ0अ0संस्थान, कोसी, अल्मोड़ा।
20– श्री एस0 सिंघल, विभागाध्यक्ष, आर0एस0एम0 डिवीजन, एफ0आर0आई, देहरादून।
21– श्री वी0के0 मलकानी, प्रोफेसर, भारतीय वन्य जीव संस्थान, देहरादून।
22– डा0 सुभाष नोटियाल, प्रभाग प्रमुख, वनस्पति विज्ञान विभाग, एफ0आर0आई0 देहरादून।
23– वन संरक्षक, अनुसंधान वृत्त, हल्द्वानी।
24– वन वर्धनिक, साल, हल्द्वानी।
25– वन वर्धनिक, पर्वतीय, नैनीताल।

(एस0के0 सिंह)
मुख्य वन संरक्षक
जैव विविधता संरक्षण, विकास एवं अनुसंधान,
हल्द्वानी /सदस्य सचिव, वानिकी अनुसंधान
सलाहकार परिषद, उत्तराखण्ड